रमौता चाची

जेठ का महीना चल रहा था।हर वर्ष की तरह हम अपनी गर्मी की छुट्टियॉ मनाने अपने गॉव आये हुए थे।सकलडीहा मे एक मेला लगा हुआ था।रमौता चाची के अपने सात बच्चे थे और ऊपर से हम पॉच भाई बहन।दोपहर के खाने के बाद वो हमे धर पकड़ कर एक लिपे पूते दालान मे सुलाने ले जाती थीं.जो दूसरी मंजिल पर था।इस लम्बे दालान मे एक दरवाजा और दो छोटी खिड़कियॉ थी।ये खिड़कियॉ एक वर्षाती और बसाती पोखरी की तरफ खुलती थी।इसी दिशा मे एक नीम का विशाल पेंड़ भी था।इस दालान को मेरी चाची हर दिन गोबर से लिपवाती थीं।हमारे पुश्तैनी मकान का ये दालान जेठ के भीषण महीने मे भी अपेक्षाकृत सबसे ठंढा दालान था।मेरी चाची के हॉथों मे एक लम्बे डंठल वाला ताड़ का पंखा होता था।वो उससे हम पर हवा भी करती थीं और न सोने पर उससे हमे मारती भी थीं।

हम उनकी नाक मे दम किये बैठे थेःमेला देखने जाना है।जल्द ही वो उठ जायेगा।

उनकी एक डपट पर सारे बच्चे अपनी ऑखें मूँद लेते थे और मै करवट बदल कर उनसे लिपट जाता था।कुछ तो सो जाते थे.कुछ जगे रहते थे .पर मै जगा ही रहता था।मुझे वो हमेशा अपने बॉई तरफ ही लिटाती थी और सोने से पहले मुझे ही अपने ॲकवारी मे लेती थी।

उनकी डॉट डपट से मुझे भी उतना ही दुख होता था.जितना मेरे दूसरे भाई बहनो को.परन्तु मै उनका कभीं कोई विरोध नही करता था।मेले मे जाने का शायद मेरा भी उतना ही मन करता था।

मेले का आखिरी सप्ताह चल रहा था।आने वाले रविवार की शाम को उसे उठ जाना था।रविवार को दोपहर के खाने पर अप्रत्याशित रमौता चाची का एलान हुआःखाना खाके तुम सब दालान मे चलो।मै भी आ रही हूँ।मनकू दादा को मैने खबर भिजवा दिया है।वो तीन बजे आयेंगें।अन्तु को मैने टायरगाड़ी में बिड़वा और बऊरहवा बैल को साधने को कह दिया है।ऊपर आते ही मै तुम सभी को दो रूपये दूँगीं।इनसे तुम सब अपने मनपसन्द खिलौने खरीदना।तुमलोगों के लिए खाने पीने की सारी चीजें मनकू दादा खरीदेंगे।अभीं ग्यारह बज रहे हैं।तुम लोगों के पास अभीं भी चार घन्टे का समय है।मै जब ऊपर आऊँ.तब तुम सबकी ऑखें मूँदीं होनी चाहिये।

आनन फानन खाके हम सब दालान की ओर भागे और सोने के नाम पर चुप्पी साध कर अपनी ऑखें मूँदें मेले के सपनो मे खो गये।इसके पहले मै अब तक किसी मेले मे नही गया था।

उन दिनो मे पॉच वर्ष का था।दूसरे कपड़े लत्ते पहन कर चाची से दो रूपये अपनी अपनी जेबों मे ठूँसवा चुके थे और मुझसे अपने पैन्ट के बटन तक नही बन्द हो रहे थे।वो बन्द भी कैसे होते!मॉ के हॉथों की सिली पैंटों की काजें प्रायः छोटी होती थी और बटन बड़े।दूसरे गाड़ी मे जा बैठे थे और मै अपनी बटनों से जूझा पड़ा था।मेरी उॅगलियों मे उतनी ताकत भी न थी.पर रमौता चाची की उॅगलियों मे बहुत ताकत थी।फटाफट उन्होने मेरे पैन्ट की बटने बन्द कीं और मेरी जेब मे दो रूपये का एक लाल नोट घूसेड़ कर मुझे भागने को कहा।मै बूत बना उनके सामने खड़ा था।वो मुझे झटपट गोद मे उठाई और दालान से नीचे उतरीं।

मै अपनी बहन की गोद मे बैठा ही था कि बिड़वा और बऊरहवा एक द्रूत गति से बढवल गॉव की तरफ भागे।

बीस मिनट के अन्दर हम मेले के अन्दर थे।बड़ी भींड़ थी वहॉ।दो बड़ी बहनों और मनकू दादा के संरक्षण मे हम दस बच्चे मेले की भींड़ मे जा घूसे।बैलों की चोरी के डर से अन्तु टायर गाड़ी मे ही रह गया.मेले मे नही आया।अकस्मात मुझे एक खिलौने की दुकान पर मिट्टी का एक बड़ा सा तोता दिखा।हरे रंग का लाल चोंचो वाला।उसकी कीमत मनकू दादा डेढ रूपये से कम न करवा पाये।वो था भी आखिरी पीस।मैने उसे खरीद लिया।मेरे पास अभीं भी पच्चास पैसे थे।हमारे लिए खोवे की बर्फी और हवा मिठाई मनकू दादा ने खरीदी।इनके पैसे उन्हे अलग से मिले थे।मुझे इस मेले मे एक बुढिया दिखी.जो मेले की भींड़ से जरा हट कर एक बिज्जू आम की छाया मे उसकी बाहर निकल आई जड़ों पर बैठी थी।उसके सामने एक बेंत की बड़ी टोकड़ी सिर्फ हरी कॉच की चूड़ियों से भरी पड़ी थी।दूर से मुझे उसकी ऑखें उतनी ही ममतामयी लगीं.जितनी मुझे रमौता चाची की ऑखें लगती थीं।मै मंत्रमुग्ध उसकी तरफ बढ गया।उससे मुझे मोल भाव न करना पड़ा।मैने सीधे उसके सामने अपने पच्चास पैसे धर दिये और उससे कहाःबस इतने ही हैं।अपनी कलाई के माप की मुझे बस दो चूड़ियॉ दे दो।मैने उससे सिर्फ दो चूड़ियॉ मॉगी थी और उसने मुझे छ कंगन जैसी मोटी चूड़ियॉ पकड़ा दीं।

छ बजने को आये थे।मनकू दादा ने हम सभी को समेटा और टायर गाड़ी तक ले आये।पहली बार मैने अपने भाई बहनों के खिलौनो पर नज़र डाली और उन्होने मेरे तोते पर।एक मत से सभी ने मेरे तोते को बूढा हीरामन कहा.जो आराम से मेरी गोद मे बैठा सो रहा था।मेरे भाई बहनों ने अपने दो रूपयों से आधा मेला ही खरीद रखा था।

हम वापस घर आये।मेरे दूसरे भाई बहन ऑगन मे अपने खिलौने बिछा कर खेलने लगे और मै अपना तोता रमौता चाची को दिखाने गया।वो ऑटा गूँथ रही थीं।झट से वो अपना हॉथ अपने ऑचल से साफ करके उठी और मेरी हॉथ से तोता लेकर बड़े प्यार से उसे निहारने लगीं।थोड़ी देर बाद मुझसे पूछींःऔर क्या क्या खरीदे!

ःकुछ खास नही.कहके मैने अपनी कमीज की जेब से सम्हाल कर छ चूड़ियॉ निकाल कर उनके सामने कर दीं।

ःये मेरे लिये हैं!

ःहॉ।तुमसे चूड़ियॉ बहुत टूटती हैं।दिन भर तुम इस अन्धी सी रसोई मे अकेली खानो मे जूझी रहती हो।काई तुम्हारी मदद को भी नही आता।

मुझे पागल कहके वो अपनी दाहिनी हॉथ से मुझे गोद मे उठाना चाहती थीं कि उनके बॉयें हॉथ से हीरामन छूट कर जमीन पर जा गिरा।मिट्टी का था।देखते ही देखते उसके दो टूकड़े हो गये।चाची की ऊपर की सॉस ऊपर और नीचे की नीचे।मुझे गोद मे उठाये वो बेतहासा कुऍ की ओर भागीं।अन्तु बैलों को खोल कर उन्हे पानी पिला रहा था।चाची झटटपट उसके हॉथ पर दस रूपये धर का उसे मेले तक भागने को कहीं।अन्तु तीर की तरह भागा।उन्होने मुझे इतना भी समय नही दिया कि मै उन्हे ये बता सकूँ कि अन्तु को मेले मे भेजने का कोई लाभ नही होगा।खिलौने की दुकान का ये आखिरी तोता था।फिर अब तक तो ये खिलौने वाला अपनी दुकान भी बढा लिया होगा।

अन्तु ऑखों से ओझल हो चुका था।कुऍ की जगत पर चाची की गोद मे बैठा मै उनका अपने आप को कोसने को सुना जा रहा था।वो रोये चली जा रही थीं।हीरामन के टूटने का मुझे कोई भी दुख न था।वो मेरी चाची से ज्यादे अनमोल थोड़े ही था।

मै जब पैदा हुआ था.तब मुझे मॉ अपना दूध नही दे सकती थीं।मुझे चाची का ही दूध मिला।एक साथ मै और प्रदीप उनकी ओर लपकते थे।प्रदीप मेरा चचेरा भाई है और मुझसे बीस दिन बड़ा है।वो अपनी मॉ को माई कहता था।उसकी देखा देखी मै भी चाची को माई ही कहता

था।ईश्वर गवाह है कि चाची हममे और अपने बच्चों मे कोई भी भेद नही जानती थीं।मुझमे तो उनके प्राण ही बसते थे।पूरे गॉव को उन्होने कह रखा था कि उनके प्रमोद का मन मोम जैसा है।अगर किसी ने उसे छेड़ा तो वो अपनी और उसकी जान एक करके रख देंगी।
कई बार मैने हॅथेलियों से उनके ऑसू पोछे और उनसे कहा भी कि वो न रोंये।एक खिलौना ही तो टूटा है।इस खिलौने की उनके सामने विसात ही क्या है!परन्तु चाची का रोना नही रूका।अब वो भगवान से भी मिन्नतें किये चली जा रही थीं।
तभी अन्तु भागता आता दिखा।हल्का सा अॅधेरा बिखरने को आया था.फिर भी मैने उसे दूर से ही देख लिया था कि उसके दोनो हॉथ खाली हैं।
निराश मुझे लिए चाची दुबारा रसोई मे आई।मेरी छोटी चाची रसोई सम्हाले हुई थी।मुझे एक पीढे पर बिठा कर चाची ऑटें की लेई से मेरा तोता जोड़ने बैठ गई और उन्होने उसे ढंग से जोड़ भी लिया।अब बड़े प्यार से वो उसे राम राम सीता राम रटने को कहने लगीं।
इस शाम मै अकेला उन्ही के हॉथों से खाया और उन्ही के संग सोया।मुझे अपने तोते का दुःख आज भी नही है और न उन दिनो था।चाची के सोने के बाद मै दबे पॉव उठा और इस जुटे तोते को सामने वाली पोखरी मे फेंक आया।फिर इसके बाद मै न कभीं किसी मेले मे गया और न कभीं अपने लिए कोई खिलौना ही खरीदा।क्या करना था मुझे इन खिलौनों का!जो मेरी इतनी ममतामयी चाची की ऑखें डबडबाते हैं।परन्तु उस शाम कुॅए की जगत पर रमौता चाची के किए मिन्नत का एक एक शब्द मुझे आज तक अक्षरशः और चित्रवत याद हैःहे प्रभु!तुम्हे मेरे बच्चे के लिए एक हीरामन हर कीमत पर पैदा करना है।मुझसे एक अपराध हो गया है।मै इस जिद्दी बच्चे को अच्छी तरह जानती हूॅ।तुम इसका बचपन खिलौनो से रहित न करना।

प्रमोद कुमार सिंह